सत्यकथा

लुधियाना : दूसरी युवती से शादी करने जा रहे प्रेमी का काट डाला प्राइवेट पार्ट

जुनून एक दीवानी का

> "पति को छोड़कर प्रेमी अमित की बांहों में सुकून तलाश रही रचना को जब पता चला कि उसका प्रेमी दूसरी युवती से शादी करने जा रहा है तो उसे किसी और के काबिल न छोड़ने की ठान कर रचना ने अमित का गुप्तांग काट डाला।

उस वक्त 17 दिसंबर की शाम गहरा रही थी जब एक युवक खून से भीगा पेंट पहले लुधियाना के सीएमजी अस्पताल पहुंचा। हाथ में उसने रूमाल में कुछ लपेट रखा था और वह रूमाल भी पूरी तरह खून से भीगा हुआ था। उसने डॉक्टर्स को जो बताया वह काफी चौंका देने वाला था। उसने बताया कि रास्ते में कुछ बदमाशों ने उसके साथ लूट पाट करने की कोशिश की जिसका विरोध करने पर बदमाशों ने उसका प्राइवेट पार्ट काटकर शरीर से अलग कर दिया। रूमाल में उसने अपना आधा अधूरा प्राइवेट पार्ट लपेट रखा था, इस उम्मीद से कि शायद डॉक्टर्स उसको आपरेशन के जरिए पुनः शरीर से जोड़ देंगे। लेकिन प्राइवेट पार्ट की हालत काफी खराब थी देखकर ऐसा लगता था मानो उसकी कटे अंग की नशों को जबरन किसी चीज से कुचल कर डेमेज करने की कोशिश की गई हो। मामला गंभीर था इसलिए अस्पताल प्रबंधन ने पुलिस को जानकारी देने के अलावा प्रारंभिक उपचार के बाद उसे पीजीआई चंडीगढ़ भेज दिया। इधर डॉक्टर्स के अलावा पुलिस अधिकारी भी इस अजूबी घटना को लेकर संदेह में थे। पुलिस का मानना था कि लूट का विरोध करने पर बदमाश आमतौर पर आदमी को ज्यादा से ज्यादा पेट या सीने पर बार करते है। प्राइवेट पार्ट काटने की बात गले से उतरने लायक नहीं थी। फिर पीड़ित युवक के पेट के बटन हुक सब सही सलामत थे। जबकि बदमाशों ने अगर उसका पेट जबरन उतारा होता तो यह संभव नहीं था। बहरहाल पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच में ले लिया। लेकिन इसी बीच पुलिस को एक ऐसी खबर मिली जिससे मामले ने नया मोड़ ले लिया। पुलिस को सूचना मिली की स्थानीय एक होटल के कमरे में युवती की नग्न लाश के पास किसी पुरूष प्रजनन अंग को कुछ कटा हिस्सा पड़ा मिला है। इससे लगभग साफ हो गया कि होटल में मिली युवती की लाश और कटे पुरूष अंग का संबंध अमित निषाद नाम के उसी युवक के साथ है जिसे कुछ ही देर पहले उपचार के लिए चंडीगढ़ रिफर किया गया है। पुलिस ने होटल पहुंचकर युवती की लाश की शिनाख्त करने की कोशिश की जिसमें पता चला कि लाश नर्स के रूप में काम करने वाली युवती रचना की है जो दोपहर में एक युवक के साथ होटल में आकर रुकी थी।

शेष पृष्ठ 4 पर...

demo pic.

demo pic.

रतलाम

आधी रात में रंगे हाथ पकड़े गए पत्नी के प्रेमी की हत्या का चर्चित मामला

demo pic.

> पति को रिश्तेदारों के साथ घर के बाहर जमा हुआ देखकर कमरे के अंदर अय्याशी की झील में उतरने की तैयारी कर रही मोहन की पत्नी रानी और उसके प्रेमी रमन ने अंदर से दरवाजा बंद कर लिया। रमन और रानी जानते थे कि उनका जीवित बचना मुश्किल है इसलिए मरने से पहले दोनों मौत के सामने खड़े होने के बावजूद अपनी इस आखिरी मुलाकात को उसके अंजाम तक पहुंचाने की कवायद में एक दूसरे में खो गए।

पुलिस गिरफ्त में आरोपी

साल भर से चल रहा अवैध रिश्ता

रमन और आरोनी मोहन की दूसरी पत्नी रानी के बीच कोई एक साल से अवैध रिश्ता चल रहा था। रानी अपने प्रेमी से मिलने के लिए उस वक्त का फायदा उठाती थी जब उसका पति मोहन अपनी पहली पत्नी से मिलने जाता था जहां मोहन की पहली पत्नी सास-ससुर के साथ रहती थी। मोहन हर महीने में तीन-चार दिन अपनी पहली पत्नी के साथ रहता था। इस दौरान दूसरी पत्नी रानी अपने प्रेमी रमन को घर पर बुलाकर उसके साथ अय्याशी करती थी।

अधूरी मुलाकात

अरे यार तुम गलत टाइम पर आए हो, घर आए पति मोहन के हाथ से उसके सामान का थैला लेकर गीता (बदला नाम) ने कहा।

क्यों भला?

अब छोड़ो बाद में बताऊंगी।

अच्छा ठीक है अब खाना खिला दो बहुत भूख लगी है।

सच है दूसरी भूख पूरी करने तो रानी जो है।

अरे यार तुम फिर शुरू हो गई।

अच्छा गुस्सा न करो। हाथ मुंह धो लो थोड़ा बाबूजी के साथ बैठ लो तब तक गर्म खाना बन जाएगा। मोहन हाथ मुंह धोकर बाहर कमरे में बैठे अपने माता-पिता के पास आकर बैग गया।

मौत सामने खड़ी थी लेकिन अय्याशी से बाज नहीं आई रानी

गांव वालों ने की न्याय की मांग

घटना दिनांक को मोहन अपनी पहली पत्नी और माता-पिता से मिलने गांव गया था। यह देखकर रानी ने अपने प्रेमी रमन को घर बुला लिया था। मगर संयोग से मोहन उसी रात दो बजे वापस लौटा तो उसने रानी और रमन को कमरे में अय्याशी करते देखकर रमन को सबक सिखाने अपने दोस्तों को फोन कर बुला लिया। मोहन के बाहर आने की जानकारी लगने पर रानी और रमन घबड़ा गए। मोहन अपने साथियों के साथ दरवाजा तोड़ने लगा तो मौत को सामने देखकर भी रानी और रमन अपनी अय्याशी से बाज नहीं आए। रानी का कहना था कि जब मरना ही है तो फिर हम अपनी मुलाकात को अधूरी क्यों छोड़े।

मौका देखकर भाग निकली थी रानी : मोहन और उसके साथ दरवाजा तोड़कर अंदर दाखिल होकर रमन पर टूट पड़े। इस बात का फायदा उठाकर रानी चुपचाप वहां से भाग गई थी। बताया जाता है कि आरोपी ने पुलिस के सामने स्वीकार किया कि अगर रानी वहां रुकती तो रमन के बाद मोहन उसे भी जिंदा नहीं छोड़ता।

दरवाजे के बाहर पड़ी लाश

40 वर्षीय मोहन रतलाम के पास एक गांव का रहने वाला था। यहां उसकी पत्नी गीता के अलावा बूढ़े माता-पिता रहते थे जबकि खुद मोहन पास के गांव में अपनी दूसरी पत्नी रानी (बदला नाम) के साथ रहकर एक बंगले पर चौकीदारी का काम करता था। रानी, मोहन से उम्र में 18-20 साल छोटी थी। कोई साल भर पहले रानी के साथ उसकी मुलाकात हुई थी जिसके बाद उसने रानी को अपनी दूसरी पत्नी बनाकर साथ रख लिया था। गीता अपने पति की दूसरी शादी से नाराज थी लेकिन धीरे-धीरे मोहन ने उसे मना लिया था। गीता नाराज न हो इसलिए महीने में दो तीन रातें वह गीता के साथ बिताने आता रहता था। 21 जनवरी के रोज भी वह यही सोचकर रानी को अकेला छोड़कर गीता के पास आया था।

मोहन बाहर कमरे में पिता के पास बैठा था इसी बीच अंदर के कमरे से गीता ने उसकी मां को आवाज दी तो मां यह कहते हुए उठ खड़ी हुई कि तू बाबूजी से बात कर मैं तेरे लिए रोटी सेंक देती हूं।

मां की यह बात मोहन के दिमाग पर हथौड़े की चोट जैसी पड़ी। मां रोटी सेंकने जा रही है इसका मतलब गीता को इन दिनों खाना नहीं बनाना है। गीता का मासिक धर्म चल रहा है तो वह मोहन को अपने साथ बिस्तर पर सोने भी नहीं देगी। यह जानकर मोहन को दिमाग घूम गया। दरअसल उस रोज सुबह से ही उसके मन में काम का कीड़ा कुलबुला रहा था। इसलिए वह गीता के पास आया था क्योंकि गीता भले की रानी की तरह कम उम्र की न थी पर पति को खुश करने का तरीका गीता, रानी से ज्यादा अच्छी तरह जानती थी।

अब मोहन की समझ में आ गया कि उसके आते ही गीता ने उससे ऐसा क्यों कहा था कि तुम गलत समय पर आए हो। गीता भी जानती थी कि मोहन जब भी गांव आता है उसके साथ रोज कई बार संबंध बनाता है।

इसलिए गीता के मासिक धर्म के बारे में जानकर मोहन ने तुरंत दाव खेलते हुए पिता से कहा कि मैं दूसरे गांव से लौट रहा था तो सोचा कि घंटा-आधा घंटा आप लोगों से भी मिलता चलूं। मुझे अभी वापस लौटना होगा क्योंकि मैं मालिक के काम से दूसरे गांव गया था। इसलिए मेरा रात में लौटना जरूरी है।

अब इतनी रात में कौन सा तेरा धनी तेरा इंतजार कर रहा होगा। सुबह जल्दी चले जाना बाहर ठंड भी बहुत है पिता ने कहा लेकिन मोहन के दिमाग पर तो सेक्स सवार था इसलिए गीता अगर उसकी इच्छा पूरी नहीं कर सकती तो क्या उसकी दूसरी पत्नी रानी तो थी जिसके साथ वह प्यार के पल बिताकर चैन की नींद सो सकता था। इसलिए माता-पिता और पत्नी के रोकने पर भी मोहन नहीं रुका और खाना खाकर वह रात लगभग एक बजे वापस रवाना हो गया।

मोहन जानता था कि रानी को बिना शराब पिए संबंध बनाना पसंद नहीं है इसलिए उसने रास्ते में एक ठेके के बाहर सो रहे चौकीदार से ज्यादा दाम देकर एक देशी शराब का अद्दा खरीदकर सीधे अपने घर पहुंच गया। लेकिन घर पहुंचकर वह अपने मकान के बाहर एक मोटर साइकल खड़ी देखकर चौक गया।

शेष पृष्ठ 7 पर...

शहडोल

लिव-इन रिश्ते, अवैध शराब और रंजिश में पनपी एक खौफनाक हत्या

मयखाना वाली बहू

> बेटे की बिन ब्याही बहू वैसे भी सास की आंख में कांटा बनकर चुभती थी। इस पर भी जब अनीता ने घर का मयखाना बनाकर अवैध शराब बेचना शुरू कर दिया तो सास-बहू की बीच तलवारें निकल आई थी। बूढ़ी सास पर जवान बहू भारी पड़ती थी इसलिए एक रोज अनीता के जेठ से बहू को हमेशा के लिए रास्ते से हटाने का फैसला कर लिया और ...

खेत में पड़ा मृतका का शव

पुलिस गिरफ्त में आरोपी जेठ

शहडोल जिले में जैतपुर थाना क्षेत्र की दर्शिला चौकी के अंतर्गत आने वाला ग्राम खाड़ा दूर से देखने पर बिल्कुल शांत, साधारण और खेतों की मिट्टी की महक से भरा हुआ गांव लगता है। लेकिन नवंबर महीने की उस ठंड भरी सुबह ने इस गांव की तस्वीर हमेशा के लिए बदल दी। इस दिन गांव की खामोश हवा में एक ऐसी सनसनी फैल गई जिसने ग्रामीणों की नींद, चैन और भरोसा सब छीन लिया।

28 नवंबर की सुबह, खेतों में काम करने गई एक महिला ने पैरा के ढेर के नीचे से झांकते एक मानव पांव को देखा। पहले तो उसे लगा कि शायद कोई मजदूर सो गया होगा या किसी ने मजाक किया है, लेकिन जैसे ही उसने हाथ से पैरा हटाया, उसकी चीख पूरे खेत में गूंज उठी। वहां खून से सनी अनीता का निर्जीव शरीर पड़ा था–जिसे देख कोई भी सहम जाए।

गांव की गलियों में अचानक अफरा-तफरी मच गई। लोग इकट्ठा होने लगे, और देखते ही देखते पुलिस भी मौके पर पहुंच गई। लेकिन यह किसी बाहरी दुश्मनी का मामला नहीं था। यह कहानी घर की चारदीवारी में पनपे तनाव, अवैध शराब के खेल, अनबन और नफरत की एक खौफनाक परिणति थी–और इसके पीछे था घर का ही एक सदस्य जीवनलाल, यानी मृतका का जेठ।

अनीता की कहानी भी उतार चढ़ाव से भरी है। गुजरात के एक कस्बे में मजदूरी करते समय माखन प्रजापति की मुलाकात अनीता से हुई। दोनों के बीच दोस्ती बढ़ी, फिर एक रात जब माखन अनीता से मिलने उसके घर पहुंचा तो अनीता ने उसका हाथ पकड़ कर उस रात अपने घर रुकने को कहा। कहना नहीं होगा कि काली अंधेरी रात में ऐसे दो जवान जिस्म जिन्हें एक दूसरे की जरूरत और चाहत दोनों थी मिलकर एकाकार हो गए।

उस रात के बाद माखन ने हर रात अनीता के साथ बिताना शुरू कर दी जिसके चलते एक रोज वह अनीता को गुजरात से लेकर अपने गांव शहडोल के खाड़ा लेकर आया, और तब से दोनों पति-पत्नी की तरह लिव-इन रिलेशन में रहने लगे।

अनीता बेफिक्र स्वभाव की, तेज-तर्रार और अपने नियमों पर चलने वाली महिला थी। गांव की परंपराओं और सामाजिक सीमाओं की उसे परवाह नहीं थी। वह पूरे गांव में खुला सिर लेकर वेपरवाह घूमती। इस पर अगर कभी

लाश मिलने के बाद मौके पर जुटी गांव वालों की भीड़

माखन की मां उसे टोकती तो वह टका सा जबाव दे देती कि वो न तो तेरे बेटे की बीवी है और न उसकी बहू। इसलिए वो उसके ऊपर अपना हुक्म चलाने की कोशिश न करे। वह तो गांव में सरे आम यह कहने से भी नहीं चूकती थी कि माखन और उसके बीच पति-पत्नी का नहीं मर्द और औरत का रिश्ता है। माखन को औरत चाहिए और मुझे मर्द।

राहुल राणा

शुरुआत के कुछ महीने तो सब ठीक चला, लेकिन समय बीतने के साथ अनीता की एक आदत ने पूरे परिवार की जिंदगी उलझा दी। दरअसल अनीता को शराब पीने का शौक था। उसे शराब बनाना भी आता था इसलिए वह गांव में चोरी छुपे शराब बनाकर बेचने लगी। अनीता यह धंधा खुले आम अपने घर से करती थी। इतना ही नहीं वह शराब पीने वालों को अपने घर में बैठकर पीने से भी मना नहीं करती थी। इसलिए आसपास के गांवों के बदमाश अनीता के घर जुड़ने लगे। अनीता भी सबसे हंसकर बातें करती थी और उसकी यहीआदत न तो सास को पसंद थी और न माखन के बड़े भाई जीवन को।

दूसरी तरफ शाम होते ही अनीता के घर में अनजान लोगों का आना-जाना शुरू हो जाता था और देर रात तक शोर-शराबा चलता रहता था। यह सब देखकर माखन तो अनीता से कुछ नहीं कहता लेकिन जीवनलाल और उसकी मां को यह बिल्कुल पसंद नहीं था।

वे दोनों मेहनत-मजदूरी करने वाले सीधे-साधे लोग थे। उन्हें डर था कि अवैध शराब उनके घर की छवि खराब कर देगी, और पुलिस के छापे या अपराधी तत्वों की नजरें घर के लिए खतरा बन सकती हैं।

मां अक्सर कहती,बहू जैसी तो बनी ही नहीं। घर को गृहस्थी चाहिए, शराब की भट्ठी नहीं।

लेकिन अनीता तर्क देती, मुझे किसी पर बोझ नहीं बनना। मैं अपनी कमाई खुद करूंगी। उसकी यही बात यही बात पूरे घर की रगों में चुभती थी। इससे घर में तनाव बढ़ता गया। माखन अक्सर गांव से बाहर मजदूरी पर रहता था। जब वह घर से दूर होता था, तभी विवाद और भड़क जाते। क्योंकि बेटा घर में न हो और बहू गैर मर्दों को घर में बैठाकर शराब पिलाए यह बात सास को हजम नहीं होती थी। इसलिए अनीता और उसकी सास के बीच अक्सर खाना बनाने, घर के काम, और शराब बेचने के मुद्दों पर झगड़े होते रहते थे। इसलिए मां और अनीता के बीच रोज-रोज के झगड़ों से जीवन तंग आ चुका था। वह यह भी जानता था कि अगर उसके कहने पर माखन ने अनीता को घर से निकालने की कोशिश की भी तो अनीता माखन को बलात्कार के आरोप में जेल तक भेज सकती है।

गांव वालों के मुताबिक, बीते एक साल से घर में रोज झगड़ा होना आम बात हो गई थी। कई बार जीवनलाल ने गांव वालों के सामने कहा भी था कि यह औरत हमारे घर को बर्बाद कर देगी।

शान से कहती थी पत्नी नहीं रखैल हूं

गांव वालों के अनुसार उन्होंने अनीता जैसी धाकड़ औरत नहीं देखी। वह घर पर ही शराब बनाकर बेचा करती थी। इतना ही नहीं उसने गांव वालों को घर में बैठकर पीने की छूट भी दे रखी थी। कभी सास उसे इस काम के लिए फटकारती तो वह साफ कह देती कि वो न तो उसके बेटे की पत्नी है और न तेरी बहू। में रखैल हूं अपने हिसाब से जिंदगी जीना जानती हूं।

गुजरात से शुरू हुई थी प्रेम कहानी

अनीता और माखन की प्रेम कहानी गुजरात से शुरू हुई थी। माखन काम की तलाश में गुजरात गया था वहीं अनीता से आंखे लड़ जाने के बाद दोनों कुछ समय गुजरात में साथ रहे बिना गांव वापस आ गए थे। सास ने बिना शादी किए अनीता के साथ रहने पर ऐतराज किया था लेकिन माखन और अनीता पर इश्क का भूत सवार था सो उन्हें किसी की चिंता नहीं थी। बाद में अनीता देशी शराब बनाकर बेचने का काम करने लगी थी।

सब जानते थे कि जीवन

लेकिन किसी ने भी अंदाज़ा नहीं लगाया था कि बात यहां तक बढ़ जाएगी। 27 नवंबर की शाम। घर में उस दिन माहौल असामान्य रूप से शांत था। कोई शोर नहीं, कोई गाली-गलौज नहीं, अनीता अपने काम में लगी हुई थी। मां को लगा कि शायद आज घर में शांति ही रहेगी। लेकिन शांत जल ही सबसे गहरा होता है। रात को जीवनलाल देर तक बाहर बैठा रहा। गांव के लोग बताते हैं कि वह उस रात बहुत चुप था, जैसे कोई भारी बात उसके दिल पर रखी हो।

शेष पृष्ठ 7 पर...

पृष्ठ 1 का शेष

लुधियाना का चर्चित हत्याकांड

जुनून एक दीवानी का

demo pic.

पुलिस ने पीजीआई चंडीगढ़ से अमित को हिरासत में लेकर उसके साथ सख्ती से पूछताछ की जिसमें उसने अपना जुर्म स्वीकार कर लिया। उसका कहना था कि लगभग दो साल से भी अधिक समय से उसके रचना के साथ शारीरिक रिश्ते थे। रचना मेरे साथ शादी करना चाहती थी। लेकिन मेरे घर वालों ने रिश्ता अन्य लड़की से तय कर दिया था। जिसका पता लगने पर रचना ने मेरा प्राइवेट पार्ट काट दिया जिससे गुस्से में आकर मैंने उसका गला दबाकर हत्या कर दी।

पूछताछ में अमित ने पूरी कहानी सुनाई जो इस प्रकार सामने आई। लुधियाना के इंडो-अमेरिकन रेस्टोरेंट के कमरा नंबर 203 में उस रोज जो कुछ हुआ, वह सिर्फ एक अपराध बल्कि ऐसी ट्रेजेडी थी जिसकी जड़ें गहरे प्रेम, टूटे वादों, सामाजिक दबाव और अंधे जुनून में थीं।

2022 के जुलाई महीने की बात है जब लुधियाना की उसी भीड़-भाड़ वाली सड़क पर, जहाँ हर कोई अपनी मंजिल की ओर दौड़ रहा था तभी अचानक रचना और अमित की मुलाकात हुई। रचना, जो तब तक एक गृहिणी और माँ की भूमिका निभा रही थी, ने अपने पति से नर्सिंग का काम सीखा था। वह अब भारती कालोनी में अपना छोटा सा क्लिनिक चलाती थी। वह जिंदगी से लड़कर आगे बढ़ने वाली औरत थी। अपने पति से अलगाव के बाद, वह अपने दो बच्चों के साथ एक किराए के मकान में रहती थी। उसकी बड़ी बेटी का एक साल पहले ही फेफड़े फेल होने से निधन हो चुका था, जिसने उसे गहरे सदमे में डाल दिया था।

अमित निषाद, न्यू अमरजीत कॉलोनी जगीरपुर का रहने वाला, एंब्रॉयडरी का काम करता था। उम्र महज 25 साल थी। साधारण परिवार से आया यह युवक महत्वाकांक्षी था और अपने पैरों पर खड़ा होना चाहता था। तीन बच्चों को जन्म देने के बाद भी रचना की खूबसूरती पर इसका कोई असर दिखाई नहीं देता था। अगर वह खुद ने बताए तो कोई भी उसे आसानी से अविवाहित समझ लेता था। पहली मुलाकात में अमित को भी यही लगा कि रचना की अभी शादी नहीं हुई है। इसलिए अविवाहित अमित उसकी तरफ आकर्षित हो गया। पहली ही मुलाकात में अमित ने उसका मोबाइल नंबर मांगा तो रचना ने भी मुस्कराते हुए उसे अपना नंबर दे दिया। शायद अमित उसके मन को भी भा गया था। दरअसल रचना को अमित में वह सहारा और प्यार दिखा जो शायद उसे अपने टूटते विवाह में नहीं मिल रहा था। अमित को रचना में अनुभव और परिपक्वता दिखी। शुरुआती दिनों में यह रिश्ता सामान्य दोस्ती जैसा था, लेकिन धीरे-धीरे यह गहराता चला गया।

फिर एक दिन खुद रचना ने पहल करते हुए अमित से कहा- तुम्हारा मन नहीं होता कि कभी तुम रात मेरे घर में रुको?

होता है मगर तुम्हारे बच्चे साथ रहते हैं इसलिए मैंने सोचा...।

क्या सोचा अगर बच्चों की रुकावट प्यार में आड़े आती होती तो किसी के घर भी एक के बाद दूसरा बच्चा पैदा नहीं होता।

अरे हां यह तो मैंने सोचा भी नहीं।

सोचते कैसे अभी तुमने प्यार का स्वाद नहीं चखा न। आज रात में मेरे घर पर ही रुकना मैं जी भरकर तुम्हारा प्यार जीना चाहती हूं।

अविवाहित अमित के लिए रचना का खुला निमंत्रण किसी लॉटरी के लगने जैसा था। इसलिए उस रात वह रचना के घर पर ही रहा जहां बच्चों को सुलाने के बाद रचना ने अपने प्रेमी को प्यार के सभी रंगों में डुबा दिया।

उस दिन के बाद अमित अक्सर घर से काम का बहाना बनाकर रात में रचना के घर पर रुकने लगा जिससे उनका प्यार लगातार गहराता गया। पति को छोड़ने के बाद रचना को एक साथी की तलाश थी इसलिए उसे लगता था कि उसमें कुछ ऐसी बात है जो किसी भी मर्द को अपने साथ बांधकर रखने के लिए काफी है। इसका एक कारण यह भी था कि रचना सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहती थी जहां उसके सैकड़ों दीवाने भी थे।

> युवक द्वारा होटल में दिन अपने आधार कार्ड में लगी फोटो से साफ हो गया कि रचना के साथ होटल में रुका युवक अमित निषाद ही था। युवती की शव लगभग निर्वस्त्र था और उसके शरीर की हालत बता रही थी कि उसकी हत्या से पहले उसने साथ जबरन या उसकी स्वीकृति से शारीरिक संबंध बनाए गए है।

रचना का अपने पति के साथ रिश्ता पहले से ही खराब चल रहा था। अमित के आने के बाद तो यह और भी बिगड़ गया। करीब डेढ़ साल पहले, रचना अपने पति से अलग हो गई और अलग रहने लगी। पति के खिलाफ उसने घरेलू हिंसा का मामला दर्ज कराया, जिसमें पति को तीन महीने की जेल भी काटनी पड़ी। रचना ने उस पर खर्च न देने का आरोप लगाया था। अब दोनों के बीच कोर्ट में केस चल रहा था। इस पूरी उथल-पुथल के बीच, अमित रचना के लिए एक सहारा बन गया। रचना बार-बार अमित से शादी करने का जिक्र करती, लेकिन अमित हमेशा इसे टाल देता। उसका कहना था कि पहले तुम्हारा पति के साथ मामला सुलझ जाए, फिर हम शादी के बारे में सोचेंगे।

अमित का भरोसा कर रचना ने अपनी जिंदगी में आगे बढ़ने का फैसला कर लिया था। उसने अपना क्लिनिक चलाना जारी रखा। दिलचस्प बात यह थी कि वह इंस्टाग्राम पर एक्टिव थी और अक्सर फिल्मी गानों पर डांस करते हुए रील्स बनाकर पोस्ट करती थी। उसका अकाउंट उसके व्यक्तित्व के दूसरे पहलू को दर्शाता था, एक आजाद ख्यालों वाली औरत जो जिंदगी को अपने तरीके से जीना चाहती थी। अमित की तरफ से शादी के वादे ने रचना को एक नई उम्मीद दी थी।

> शरीर से कटकर जमीन पर पड़े गुप्तांग को देखकर अमित गुस्से में पागल हो गया। उसने शरीर का कटा हिस्सा उठाकर अस्पताल की तरफ भागने की कोशिश की तो रचना लपक कर जमीन पर पड़े प्रेमी के खास अंग को पैरों तले कुचलने लगी ताकि वह हिस्सा ऑपरेश योग्य भी न बच सके। यह देखकर अमित गुस्से से उबल पड़ा जिससे उसने गला दबाकर रचना की हत्या कर दी।

वह इस रिश्ते को लेकर गंभीर थी, जबकि अमित का मन अब रचना से भरने लगा था। दरअसल रचना चाहती थी कि अब अमित हर रात उसके साथ रहे जो अमित के लिए संभव नहीं था।

अमित के परिवार को शायद उसके और रचना के रिश्ते के बारे में पता था या नहीं, लेकिन उन्होंने अमित की शादी तय करने का फैसला किया। पारंपरिक भारतीय परिवारों की तरह, उन्होंने अमित के लिए एक लड़की देखी और सगाई कर दी। अमित ने शायद इस सगाई के खिलाफ ज्यादा विरोध नहीं किया क्योंकि वह खुद रचना से पीछा छुड़ाना चाहता था। लेकिन लेकिन समस्या यह थी कि उसे रचना को यह बात बतानी थी। वह जानता था कि रचना इस खबर को बुरी तरह से लेगी। तीन महीने पहले ही, जब रचना ने शादी का दबाव डाला था, तो दोनों में झगड़ा हुआ था। अमित डर रहा था कि रचना क्या प्रतिक्रिया देगी।

इसलिए काफी सोच विचार कर उसने रचना को यह बात उस समय बताने का फैसला किया जब रचना उसके साथ शारीरिक सुख उठाने में डूबी हो। क्योंकि उसे मालूम था कि जब रचना पर सेक्स का खुमार छाता है तो वह उस दौरान हर बात पर आसानी से राजी हो जाती है। क्योंकि उस समय उसे सिवाए सुख के कुछ और नहीं सूझता है। उसने सोच लिया कि वह रचना को अपनी सगाई की बात बताने के साथ यह वादा भी कर लेगा कि वो शादी के बाद भी रचना को शारीरिक सुख देता रहेगा जिससे वह प्यार के नशे में इस बात को स्वीकार कर लेगी। इसके लिए उसने रचना के घर में मिलने के बजाए बाहर किसी होटल में मिलने की योजना बनाई क्योंकि उसे डर था कि प्यार का खुमार उतरने के बाद रचना उसकी इस बात का विरोध कर सकती है। लेकिन होटल में यह सुविधा थी कि प्यार पूरा होते ही दोनों अपने-अपने रास्ते चले जाएंगे।

इसके लिए उसने फोन किया और मिलने के लिए होटल चलने को कहा। रचना ने होटल के बजाए उसको घर पर मिलने को कहा लेकिन अमित ने कहा कि वह कुछ नया करना चाहता है इसलिए नई जगह मिलेंगे। इस पर रचना तैयार हो गई जिसके बाद 12 दिसंबर को दोपहर करीब साढ़े बारह बजे, अमित रचना को लेकर दाना मंडी जालंधर बाइपास के पास स्थित इंडो-अमेरिकन होटल पहुंचा।

होटल की दूसरी मंजिल पर कमरा नंबर 203। अमित ने सिर्फ अपना आईडी दिखाया, रचना का कोई आईडी नहीं लिया गया। कमरे में दोनों ने कुछ देर बातचीत की। फिर शारीरिक संबंध बनाने लगे। अमित ने अपने एंब्रॉयडरी के काम में इस्तेमाल होने वाला कटर निकालकर टेबल पर रख दिया।

थोड़ी देर में रचना अमित के प्यार में पागल हो गई जिससे वह आंखें बंद कर गहरी सांसे लेने लगी। अमित समझ गया कि यही सही मौका है जब रचना उसकी किसी बात का विरोध नहीं करेगी इसलिए उसने धीरे से अपना चेहरा रचना के कानों के पास ले जाकर उसे बताया कि सॉरी यार घर वालों ने उसकी सगाई कर दी है। इसलिए उनकी बात रखने उसे शादी तो करना पड़ेगी लेकिन तुम चिंता मत करो मैं हमेशा की तरह तुम्हारे अपने इस रिश्ते को कायम रखूंगा। अमित का मानना था कि उत्तेजना में डूबी रचना इस वक्त कोई बड़ी प्रतिक्रिया नहीं देगी, लेकिन उसका अनुमान गलत साबित हुआ।

demo pic.

> अस्पताल में अपने साथ लूट की झूठी कहानी गढ़ कर अमित ने खुद का इलाज करवाना चाहा लेकिन थोड़ी ही देर में शहर की एक होटल में युवती की लाश के साथ कटा हुआ पुरूष गुप्तांग मिलने से पूरी कहानी पर से पर्दा उठ गया।

मौत की खबर सुनकर नहीं आया पति

रचना की मौत के बाद उसके परिवार ने इस कहानी के कई नए पहलू खोल दिए। रचना के भाई ने बताया कि उसकी शादी करीब 11 साल पहले आजमगढ़ में हुई थी। पहले छह साल तक रिश्ता ठीक चला, तीन बच्चे हुए। लेकिन फिर अमित के आने के बाद सब कुछ बिगड़ गया। भाई ने बताया कि रचना की मौत की खबर मिलने पर उन्होंने रचना के पति को फोन किया, लेकिन उसने फोन नहीं उठाया। जब उन्होंने अपने भांजे को उनके घर भेजा, तो उस घर में रचना के पति के साथ रहने वाली महिला ने कहा कि अगर रचना मर गई है तो ये बहुत खुशी की बात है। रचना की बड़ी बेटी की पहले ही मौत हो चुकी है रचना के दोनों बेटों को पुलिस ने उनके भाई के सुपुर्द कर दिया। दोनों बच्चे अब अनाथों की तरह जिंदगी जीने को मजबूर हैं। रचना का भाई फैक्ट्री में काम करता है। उसकी आर्थिक स्थिति भी इतनी मजबूत नहीं है कि वह दोनों बच्चों का भार उठा सके।

अनिश्चित है ऑपरेशन का नतीजा

चंडीगढ़ के पीजीआई अस्पताल में सर्जरी के द्वारा अमित के शरीर के कटे अंग को जोड़ दिया गया है। लेकिन ऑपरेशन कितना सफल होगा इस बारे में डॉक्टर्स का कहना है कि चूंकि प्राइवेट पार्ट बुरी तरह से डैमेज था इसलिए घाव भरने के बाद पुरानी स्थिति बनेगी या नहीं इस बारे में अभी कुछ नहीं कहा जा सकता। पुलिस ने अमित के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज किया। उसे गिरफ्तार कर लिया गया, लेकिन चूंकि वह इलाज करा रहा था, इसलिए उसे अस्पताल में ही पुलिस हिरासत में रखा गया। पुलिस उसके स्वस्थ होने का इंतजार कर रही थी, ताकि आगे की कार्रवाई की जा सके।

अमित की बात सुनते ही रचना का गुस्सा फूट पड़ा। वह चीखने-चिल्लाने लगी, गालियां देने लगी। अमित ने उसे शांत करने की कोशिश की, लेकिन रचना का गुस्सा शांत होने का नाम नहीं ले रहा था। तभी उसकी नजर टेबल पर पड़े कटर पर पड़ी। गुस्से में आकर उसने कटर उठाया और यह कहते हुए अमित के प्राइवेट पार्ट को उसके शरीर से अलग कर दिया कि यही तुम्हारे धोखे की सजा है अब तुम अपनी पत्नी तो क्या किसी के साथ भी कुछ नहीं कर सकोगे।

अमित चीखा। असह्य पीड़ा से तड़प उठा। वह जानता था कि कम से कम समय में अस्पताल पहुंचने पर उसका कटा अंग वापस जोड़ा जा सकता है। इसलिए वह अपना कटा अंग उठाने लपका। रचना समझ गई कि अमित का इरादा क्या है इसलिए उसने पहने तो अमित के शरीर के उसी हिस्से पर एक और बार करने की कोशिश की लेकिन अमित ने उसका हाथ बीच में ही पकड़ लिया तो कटे अंग को नुकसान पहुंचाने के लिए रचना ने बिस्तर से उतरकर उसे पैरों तले कुचलना शुरू कर दिया। रचना के खतरनाक इरादे देख अमित डर गया इसलिए उसने रचना पर हमला कर अपने शरीर का कटा भाग बचाने की कोशिश की।

जिससे लड़ाई और हिंसक हो गई। रचना की नाक और मुंह से खून बहने लगा। अमित, जो अब तक पीड़ा और गुस्से से अंधा हो चुका था, ने रचना को नीचे पटक दिया। फिर उसने दोनों हाथों से रचना का गला दबा दिया। रचना छटपटाती रही, लेकिन अमित ने गला नहीं छोड़ा। तब तक नहीं, जब तक कि रचना की सांसें बंद नहीं हो गईं।

जब अमित को एहसास हुआ कि रचना मर चुकी है, तो वह सदमे से उबरा। उसने अपने घाव को किसी तरह कपड़े से बांधा। रचना को अर्धनग्न हालत में ही बेड पर पड़ा छोड़कर वह कमरे से बाहर निकलकर सीधे सीएमसी अस्पताल पहुंचा। वहाँ उसने डॉक्टरों को बताया कि रास्ते में कुछ गुंडों ने उस पर हमला कर दिया और उसका यह हाल किया है। डॉक्टरों ने उसकी हालत गंभीर देखकर उसे पीजीआई चंडीगढ़ रेफर कर दिया। इस दौरान पुलिस ने उसकी माँ को सूचना दी, लेकिन उन्हें भी यही बताया गया कि बदमाशों ने हमला किया है।

इधर, होटल में जब अमित लंबे समय तक नहीं लौटा तो स्टाफ ने कमरे में जाकर देखा। रचना का शव बेड पर पड़ा था। पुलिस को सूचना मिली। फॉरेंसिक टीम ने कमरे की जांच की। कटर बरामद हुआ। चादर और बेड के आसपास फिंगरप्रिंट लिए गए। रचना के शरीर पर चोट के निशान थे सिर पर चोट, शरीर पर खरोंचें और आईब्रो पर कट का निशान। पुलिस ने होटल को सील कर दिया और स्टाफ से पूछताछ शुरू की। होटल स्टाफ ने बताया कि दूसरी मंजिल पर होने के कारण कोई आवाज सुनाई नहीं दी। उन्होंने यह भी बताया कि अमित ने सिर्फ अपना आईडी दिया था लड़की का नहीं।

जब पुलिस को सीएमसी अस्पताल से एक युवक के कटे हुए प्राइवेट पार्ट के साथ आने की जानकारी मिली, तो उन्हें शक हुआ। दोनों घटनाओं को जोड़कर देखा गया। पीजीआई पहुंचकर पुलिस ने अमित से पूछताछ की। शुरू में तो उसने गुंडों के हमले की कहानी दोहराई, लेकिन जब पुलिस ने दबाव डाला और सबूत दिखाए, तो अमित ने सारा किस्सा कबूल कर लिया।

कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित

मृतका रचना तथा अस्तपाल में भर्ती आरोपी प्रेमी

सोशल मीडिया भी जिम्मेदार

इस मामले में लोगों का कहना है कि घटना के लिए सोशल मीडिया भी एक हद तक जिम्मेदार है जिसने किसी भी औरत की खूबसूरती को नुमाइश की वस्तु बना दिया है। महिलाओं के सोशल मीडिया पोस्ट लाइक करने वालों की कमी नहीं है फिर अगर महिला जवान और खूबसूरत भी है तो प्रशंसकों के लाईक और कामेंट्स उसका दिमाग खराब कर देते है। जिससे उनको अपने पति में लाखों कमी और प्रशंसकों में इतनी ही खूबियां नजर आने लगती है। रचना के साथ भी यही स्थिति बनी हुई थी।

demo pic.

बिना डिग्री चलाती थी अस्पताल

रचना का पति पेशे से कम्पाउंडर था उसने अपना एक छोटा सा क्लीनिक खोल रखा था। रचना ने पति के साथ रहकर ही कुछ दवाओं के नाम और इंजेक्शन लगाना सीखा था। इसलिए पति से अलग होने के बाद वह खुद अपना अस्पताल चलाने लगी थी।

प्रेमिका के प्यार को वासना समझ बैठा आरोपी

वास्तव में आरोपी अमित, प्रेमिका रचना के प्यार को केवल उसकी वासना समझता था। उसे इस बात का शक तो था कि रचना किसी अन्य लड़की के साथ उसकी शादी की बात स्वीकार नहीं करेगी। लेकिन उसे इस बात का भ्रम भी था कि अगर वो रचना से शादी के बाद भी मिलते रहने की बात करेगा तो वह तैयार हो जाएगी। इसीलिए उसने दूसरी लड़की के साथ अपनी सगाई होने की बात उस वक्त रचना को बताई थी जब वह उसके साथ शारीरिक सुख में डूबी थी। यही अमित, रचना को समझने में भूल कर गया। लेकिन रचना की प्रतिक्रिया भी बेहद घातक रही जो उसकी हत्या का कारण बनी।

इसी होटल में घटी घटना

तिरूवनंतपुरम

जहर देकर प्रेमी की हत्या करने वाली कॉलेज गर्ल को मिली मौत की सजा

demo pic.

" कन्याकुमारी के जिस कालेज में ग्रीष्मा साहित्य की स्टूडेंट थी शेरोन उसी कालेज में रेडियोलॉजी का। दोनों में दोस्ती होने के बाद नजदीकियां भी बढ़ी लेकिन जब ग्रीष्मा की शादी एक सैन्य अधिकारी से तय हो जाने पर भी शेरोन ग्रीष्मा से दूर जाने राजी नहीं हुआ तो प्रेमी से पीछा छुड़ाने के लिए ग्रीष्मा ने जहर देकर प्रेमी को मौत की नींद सुला दिया था।

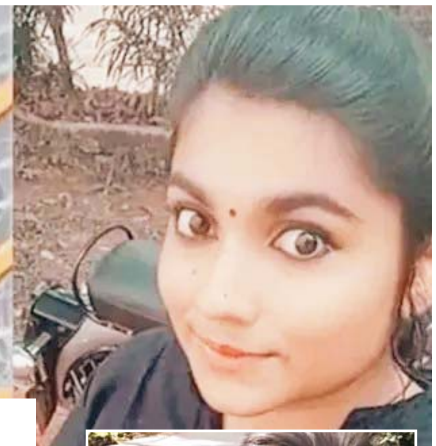

मृतक और आरोपी प्रेमिका

मामा को तीन साल की सजा , मां बरी

अदालत ने मामले में तीसरे आरोपी और ग्रीष्मा के मामा निर्मलाकुमारन नायर को सबूत नष्ट करने के लिए आईपीसी की धारा 201 के तहत तीन साल की सजा और 50,000 रुपये जुर्माने की सजा सुनाई है जबकि सबूतों के अभाव में ग्रीष्मा की मां सिंधु का बरी कर दिया गया है। ग्रीष्मा ने सजा में नरमी के लिए अपनी एजुकेशन की उपलब्धियों, पूर्व में आपराधिक रिकॉर्ड न होने और माता-पिता की इकलौती बेटी होने का हवाला दिया। हालांकि, 586 पन्नों के अपने फैसले में अदालत ने कहा कि आरोपी के सामाजिक पृष्ठभूमि, पारिवारिक परिस्थितियों, उम्र, आपराधिक रिकॉर्ड न होने और उसके अच्छे आचरण को 'दुर्लभतम मामलों' की श्रेणी से बाहर करने के लिए सहायक नहीं माना जा सकता।

पहले भी कर चुकी थी कोशिश

जांच में सामने आया कि ग्रीष्मा इससे पहले भी शेरोन की जान लेने की कोशिश कर चुकी थी। वह पानी और दूध में उसे नींद एवं पैरासिटामाल की गोलियां घोलकर पिलाने का प्रयास कर चुकी थी। लेकिन इससे शेरोन की जान बच गई थी। इसलिए उसने सीधे उसे जहर पिलाकर जान ले ली।

दिल देकर ली जान

बीस जनवरी की सुबह से ही केरल की नेय्यातिनकारा जिला अदालत में काफी भीड़ जमा हो चुकी थी। दरअसल इस दिन अतिरिक्त जिला न्यायाधीश कोई ढाई साल पुराने हत्या के एक ऐसे मामले में अपना फैसला सुनाने जा रहे थे जिसकी गूंज पूरे राज्य में ही नहीं देश में सुनी गई थी।

मामला शेरोन राज नाम के 25 वर्षीय युवक की हत्या का था। शेरोन की गर्ल फ्रेंड ग्रीष्मा नायर पर जहर देकर अपने प्रेमी की हत्या का आरोप था। अभियोजन के अनुसार ग्रीष्मा ने 10 अक्टूबर 2022 को अपने प्रेमी शेरोन को आयुर्वेदिक शरबत में खरपतवार नाशक दवा मिलाकर पिला दी थी। ग्रीष्मा के घर से निकलते ही शेरोन की हालत खराब होने लगी जिससे उसे अस्पताल में भर्ती करवाया गया जहां 15 दिन तक चले उपचार के बाद शेरोन की मौत हो गई थी। 28 अक्टूबर को ग्रीष्मा के खिलाफ मामला दर्ज कर 31 अक्टूबर को उसे गिरफ्तार कर लिया गया था। इस मामले में ग्रीष्मा की मां सिंधु और चाचा निर्मला कुमारन नायर को भी सबूत मिटाने का आरोपी बनाकर गिरफ्तार किया गया था।

जैसा की होता है गिरफ्तारी के बाद सबसे पहले ग्रीष्मा की मां को जमानत मिली फिर चाचा और सबसे अंत में सिंतबर 2023 में ग्रीष्मा को भी जमानत मिल गई थी। लगभग पूरे दो साल तक मामले की सुनवाई चली जिसमें दोनों पक्ष के वकील ने अपने-अपने पक्ष में दलीलें पेश की लेकिन अंतः अदालत ने ग्रीष्मा को हत्या और उसके चाचा को सबूत नष्ट करने का दोषी पाया गया जबकि ग्रीष्मा की मां सिंधु को सबूतों के अभाव में बरी कर दिया गया।

20 जनवरी को तय समय पर अदालत ने अपना फैसला सुनाने से पहले अपराधी ग्रीष्मा और उसके चाचा निर्मला कुमारन नायर की तरफ एक नजर देखकर 586 पेज का अपना फैसला सुनाते हुए मामले को रेयर आफ रेयरेस्ट मानते हुए 24 वर्षीय ग्रीष्मा को सजा-ए-मौत की और उसके चाचा को सबूत छुपाने के आरोप में 3 साल की सजा सुनाते हुए कहा कि आरोपिया ने विश्वास का कत्ल करते हुए अपने प्रेमी की हत्या की है इसलिए उसकी उम्र, शिक्षा तथा दूसरे किसी पहलू पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है।

इस सजा की घोषणा के बाद ग्रीष्मा केरल में सबसे कम उम्र की ऐसी युवती बन गई जिसे मौत की सजा सुनाई गई है। ग्रीष्मा तामिलनाडू के कन्याकुमारी जिले में रामवर्मनचिराई कस्बे की रहने वाली है। पढ़ने लिखने में बेहद होशियार ग्रीष्मा को साहित्य से बेहद लगाव था इसलिए स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के बाद उसने अंग्रेजी साहित्य में उच्च शिक्षा लेने के इरादे से कन्याकुमारी के एक निजी कालेज में दाखिला ले लिया था।

वहीं ग्रीष्मा को प्रेमी शेरोन राज केरल के तिरूवनंतपुरम जिले में वारसाला गांव का रहने वाला है। संयोग से शेरोन भी उसी कॉलेज में रेडियोलॉजी विषय की शिक्षा प्राप्त कर रहा था जहां ग्रीष्मा पढ़ती थी। इस दौरान ट्रेन से कॉलेज आते-जाते उनकी मुलाकात हुई जो जल्द ही गहरी दोस्ती में बदल गई। ग्रीष्मा बेहद सुंदर थी। उसकी सुंदरता में वह तमाम विशेषताएं थी जो एक दक्षिण भारतीय युवती की सुंदरता में अपरिहार्य मानी जाती हैं। इसलिए धीरे-धीरे शेरोन ग्रीष्मा की तरफ झुकने लगा और एक रोज उसने ग्रीष्मा के सामने अपने प्रेम का प्रस्ताव रख दिया। शेरोन में कोई कमी नहीं थी। ग्रीष्मा की तरह मलयाली मूल का भी था इसलिए उसने शेरोन का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। शेष पृष्ठ 7 पर...

आर्मी अफसर के लिए दिया प्रेमी को धोखा

ग्रीष्मा के परिवार वालों ने उसका रिश्ता एक आर्मी अफसर से तय कर दिया था। इसलिए ग्रीष्मा को लगने लगा था कि आर्मी अफसर की पत्नी बनकर वह पूरा जीवन आराम से बिता सकती है। इसलिए उसने शेरोन से रिश्ता खत्म करने को कहा लेकिन शेरोन उसके साथ अपना रिश्ता खत्म करने राजी नहीं हुआ तो अच्छी जिंदगी की चाहत में उसने शेरोन की जहर देकर हत्या कर दी।

आरोपी प्रेमिका को जेल ले जाती पुलिस

लगाया था यौन शोषण का आरोप

सुनवाई के दौरान ग्रीष्मा ने शेरोन पर आरोप लगाया कि शेरोन ने उसका शारीरिक शोषण किया लेकिन अदालत ने यह कहते हुए उसके आरोपों को सत्य नहीं माना कि दोषी द्वारा शेरोन द्वारा शारीरिक शोषण के दावे में सबूतों का अभाव है। उसने मृतक के साथ हुई चैटिंग में कभी उसके ऊपर ऐसे आरोप नही लगाए। ऐसे में मृतक पर लगाए गए यौन शोषण के आरोप सत्य नहीं माने जा सकते।

CMYB

...पृष्ठ 2 का शेष

मोहन का मन कई शंकाओं से भर उठा। उसने चुपचाप जाकर दरवाजे की दरार से अंदर देखा तो अपनी पत्नी रानी को पूरी तरह से निर्वस्त्र होकर एक पिकअप कर्मी रमन की गोद में बैठा देखकर सन्न रह गया। रमन एक लोड़िग पिकअप पर काम करता था और अक्सर सेठजी का माल लेकर बंगले पर आता रहता था जिससे मोहन रमन को अच्छी तरह से जानता था।

मोहन ने फिर एक बार दरवाजे से अंदर झांका। रमन भी रानी की तरह निर्वस्त्र था और रानी रमन की गोद में बैठकर पास रखी दारू की बोतल को बीच-बीच में उठाकर घूंट भर रही थी।

यह नजारा देखकर मोहन का दिमाग घूम गया। जिस रानी के पीछे उसने अपनी पहली पत्नी गीता को धोखा दिया वहीं रानी दूसरे मर्द के साथ ऐसी बेशर्मी से हमबिस्तर हो रही है। गुस्से से भरे मोहन ने तुरंत अपने रिश्तेदारों को फोन लगाकर उसके घर आने का कहा जिससे थोड़ी देर में पास के गांव से उसकी दो मौसियों के चारों बेटे वहां पहुंच गए।

कड़ाके की ठंड में घर के बाहर बैठे मिले मोहन ने तीनों को रानी की करतूत बताई कि वह किस तरह अपने प्रेमी की गोद में बैठकर अय्याशी कर रही है। मोहन ने उनसे कहा कि वह दोनों को जिंदा नहीं छोड़ना चाहता इसलिए उसने उन सभी बुलाया था। सभी इस काम में मोहन को साथ देने राजी हो गए।

लेकिन इसी बीच घर के बाहर लोगों की आवाज सुनकर रानी चौंक गई उसने प्रेमी की गोद से नीचे उतर कर खिड़की के पास आकर बाहर देखा तो पति को अपने तीन-चार साथियों के साथ देखकर वह समझ गई कि आगे क्या होने वाला है। इसलिए उसने कमरे में अंदर से ताला लगा दिया ताकि मोहन अंदर न आ सके। लेकिन रमन के लिए घर से भागने का कोई दूसरा रास्ता नहीं था जिससे वह अंदर फंस कर रह गया।

इधर जब मोहन के दरवाजा खटखटाने पर रानी ने दरवाजा नहीं खोला तो बबूल और उसके साथ दरवाजे के बगल से दीवार खोदने लगे।

रानी और रमन को मौत सामने खड़ी दिख रही थी। लेकिन तभी रानी बोली अब मरना तो है ही तो क्यों हम अपनी मुलाकात को अधूरी छोड़ें यह कहकर वह रमन से लिपटकर प्यार करने लगी। रमन पहले तो डरा लेकिन फिर वह भी रानी का साथ देने लगा। इधर जब तक बबूल और उसके साथ दीवाल तोड़कर दरवाजे की सांकल हाथ अंदर डालकर खोलते तब तक प्यार का सफर पूरा कर

demo pic.

रानी और रमन कपड़े पहन कर भागने के लिए तैयार हो गए। इसलिए ज्यों की मोहन साथियों के साथ अंदर दाखिल हुआ रमन और रानी ने भागने की कोशिश की मगर चारों ने उन्हें पकड़ लिया जिसके बाद सबसे लाठी और लोहे की सब्बल से रमन की पिटाई जिससे जब वह बेहोश हो गया तो चारों ने बैठकर शराब फिर सुबह होने से पहने मोहन अपने दोस्त दिनेश परमार के साथ रमन की मोटर साइकल पर बेहोश रमन को बीच में बैठाकर कनेरी गांव लाया और यहां हाईस्कूल के पास रमन को फेंककर उसकी मोटर साइकल वहीं रखकर वापस तितरी चले गए।

इधर सुबह होते की रतलाम के तत्कालीन डीडी नगर थाना टीआई रविन्द्र दंडोतिया को कनेरी में किसी युवक की लाश पड़ी होने की खबर मिली तो वह मौके पर जा पहुंचे। लाश की शिनाख्त रमन भभोर निवासी जैतमाड़ी के तौर पर होने के बाद एसपी रतलाम ने डीडीनगर टीआई की एक टीम इस मामले में गठित कर दी। पुलिस ने चौतरफा मुखबिरों को सक्रिये कर दिया जिससे जल्द ही खबर लग गई कि रमन का प्रेम प्रसंग तितरी निवासी मोहन की पत्नी रानी के साथ चल रहा था और घटना दिनांक से ही रानी भी घर से लापता है। जिसके साथ पुलिस ने सभी आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया।

कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित

...पृष्ठ 3 का शेष

उसे गुस्सा तो था हीलेकिन अब उस गुस्से में स्थिरता आ चुकी थी। लेकिन अगले दिन उसकी गुस्सा ने विकराल रूप ले लिया।

सुबह-सुबह घर में फिर बहस शुरू हो गई। कारण वही था, शराब बनाने का और मां को समय पर खाना न देने का।

मां ने जीवनलाल को आवाज देकर कहा देख ले, आज फिर दिन शुरू होते ही इसने हंगामा कर रखा है। जीवनलाल अंदर गया। उसकी आंखों में पिछले एक साल का जमा हुआ गुस्सा तैर रहा था। अनीता जरा भी झुकने को तैयार नहीं थी। उसने ताना मारा मतलबी लोग बस काम निकलवाना जानते हैं।

यही शब्द जीवनलाल के भीतर आग बनकर भड़क उठे। उसने पहले अनीता को धक्का दिया। बात बढ़ी, और अनीता ने भी पलटकर उसे धक्का दे दिया। उसी क्षण जीवनलाल को लगा कि उसकी इज्जत, उसका धैर्य, और उसका गुस्सा-सब उससे छिन रहा है। इसी बीच

उसकी नजर घर के कोने में रखी कुल्हाड़ी पर पड़ी। यह एक ऐसा पल था जहां सोचने का समय था, लेकिन गुस्सा निर्णय लेने लगा।

और फिर कुछ ही सेकंड में कुल्हाड़ी हवा में उठी और ताबड़तोड़ वार होने लगे। अनीता चीखी, बचने की कोशिश की, लेकिन जीवनलाल जैसे किसी और ही दुनिया में पहुंच चुका था। कुल्हाड़ी के वार पर वार और कुछ ही देर में खून आंगन में बहने लगा।

घर की दीवारें इस खौफनाक आवाज की गवाह बनीं-लेकिन चुप रहीं। वारदात के बाद जीवनलाल की सांसें तेज चल रही थीं। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या कर चुका है। लेकिन अब वापसी का कोई रास्ता नहीं था। उसने जल्दी-जल्दी अनीता के शरीर को घसीटा और उसे खेत-खलिहान की ओर ले गया-जहां पैरा का बड़ा ढेर रखा हुआ था।

वहां उसने शव को पैरा के नीचे छिपाया, मिट्टी और सूखे घास से उसे ढंक दिया। सब कुछ ऐसे किया जैसे वह यह काम पहले भी कर चुका हो-या फिर उसके भीतर का गुस्सा उसकी बुद्धि को पूरी तरह निगल चुका था। घर लौटते समय उसने हाथ-पैर धोए, और बिल्कुल सामान्य की तरह बैठ गया। जैसे कुछ हुआ ही नहीं।

लेकिन अपराध कितना भी गहरा हो, गांव की मिट्टी के पास सब देखने की आंखें होती हैं। अगली सुबह खेत में काम करने गई महिला ने पैरा के नीचे शव देखा और गांव में खलबली मच गई। जब पुलिस पहुंची, तो सबसे पहले संदेह परिवार पर गया। अनीता के शरीर पर कुल्हाड़ी के गहरे घाव थे, और उसके कपड़ों पर घर की मिट्टी के निशान थे। दर्शिला चौकी प्रभारी राजकुमार सिंह ने पूरे परिवार से पूछताछ शुरू की। माखन सदमे में था और बार-बार कह रहा था मैं तो बाहर थाज मुझे कुछ नहीं पता। सास रो रही थी, लेकिन उसकी आंखों में डर भी था। पुलिस ने जब जीवन लाल से पूछताछ की तो वह टूट गया। उसने बताया कि वो हमारे घर को बर्बाद कर रही थी साहब रोज झगड़ा शराब का धंधा मां भी परेशान थीज गुस्से में बस हाथ से निकल गया सब।

पुलिस ने घटनास्थल से खून से सनी मिट्टी, कुल्हाड़ी, और कपड़ों के नमूने इकट्ठे किए। जीवनलाल को गिरफ्तार कर लिया गया है। उसके खिलाफ हत्या और सबूत छिपाने के आरोप में मामला दर्ज हुआ है। पुलिस का कहना है कि आगे जांच में यह भी देखा जाएगा कि अनीता का अवैध शराब का कारोबार कितना बड़ा था और क्या इलाके में कोई और इससे जुड़ा था।

कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित

...पृष्ठ 6 का शेष

जिसके बाद उनकी प्रेम कहानी केरल की हरी-भरी घाटियों और कन्याकुमारी के समुद्र तट पर दूर-दूर तक फैली रेतीले किनारों में गूंजने लगी। जिसका नतीजा यह हुआ कि धीरे-धीरे दोनों एक दूसरे के इतने करीब आ गए कि वहां वापस दूर जाने की कल्पना भी नहीं कर सकते थे।

लेकिन अचानक की ग्रीष्मा का मन उस समय बदल गया जब परिवार वालों ने 2022 के मार्च महीने में नागरकोइल में रहने वाले एक आर्मी आफिसर के साथ उसकी सगाई तय कर दी। ग्रीष्मा ने इसका विरोध किया लेकिन जब परिवार वालों ने उसे एक रेडियोलाजिस्ट और आर्मी अफसर के साथ बिताए जाने वाले जीवन का अंतर समझाया तो ग्रीष्मा को उनकी बात सच लगी। जिससे उसने शेरोन के साथ अपना रिश्ता खत्म करने का फैसला कर लिया। इसलिए उसने धीरे-धीरे शेरोन से दूरी बनाना शुरू कर दिया। यह बात जब शेरोन का समझ आई तो उसने ग्रीष्मा से इसका कारण पूछा जिस पर पहले तो वह टालती रही लेकिन बाद में उसने पूरी बात बताते हुए शेरोन से कहा कि हमारा साथ यहीं तक था अब वह घर वालों को विरोध कर उसके साथ आगे का सफर तय नहीं कर सकती।

लेकिन शेरोन किसी भी कीमत पर ग्रीष्मा का संग नहीं छोड़ना चाहता था। इसलिए वह ग्रीष्मा से लगातार मिलकर उसे अपने सच्चे प्यार का भरोसा दिलाने की कोशिश करता रहा। इससे ग्रीष्मा समझ गई कि शेरोन उसे किसी भी हालत में अपने से दूर नहीं होने देगा। उसे इस बात का भी डर था कि अगर वह जबरदस्ती शेरोन से दूर हुई तो हो सकता है कि शेरोन अपने साथ उसके संबंधो की बात ग्रीष्मा के मंगेतर को बता दे। इसलिए उसने काफी सोच विचार के बाद शेरोन का रास्ते से ही हटाने का फैसला कर लिया।

इसके लिए उसने योजना बनाकर 10 अक्टूबर 22 को शेरोन को अपने घर बुलाया और स्वागत में एक आयुर्वेदिक जूस पीने दिया जिसमें उसने एक जहरीला हर्बीसाइड मिलाया था। चूंकि यह जूस स्वाद में कड़वा होता है इसलिए शेरोन को इसके जहरीला होने का भान नहीं हुआ। लेकिन इसके बाद वह जब अपने घर पहुंचा तो उसे उल्टियां होने लगी। जिससे वह समझ गया कि उसके साथ ग्रीष्मा ने धोखा किया है। यह बात उसने अपने एक दोस्त को भी बताई इसके अलावा वह वीडियो भी दिया जो उसने ग्रीष्मा के घर जूस पीते हुए ग्रीष्मा के साथ बनाया था।

अस्पताल में शेरोन की हालत लगातार बिगड़ती गई और 15 दिन बाद 25 अक्टूबर को उसकी मौत हो गई। जिसके बाद जब दोस्त ने पूरी बात शेरोन के माता-पिता को बतलाई तो उन्होंने इसकी रिपोर्ट पुलिस में कर दी। पीएम रिपोर्ट में शेरोन को जहर दिए जाने की बात सामने आने पर 28 अक्टूबर को ग्रीष्मा के खिलाफ मामला दर्ज कर उसे 31 अक्टूबर को गिरफ्तार कर लिया गया था। अदालत में ग्रीष्मा के वकील ने उसे बचाने की काफी कोशिश की लेकिन सारे सबूत उसके खिलाफ थे जिसके चलते अदालत ने ग्रीष्मा को मौत की सजा सुना दी।

कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित

...पृष्ठ 8 का शेष

चोरी की शिकायत मिलते ही पलासिया थाने की पुलिस ने कमर कस ली। जोन-3 के डीसीपी राजेश व्यास के नेतृत्व में एक विशेष टीम बनाई गई। पुलिस ने सबसे पहले आसपास के 800 से अधिक सीसीटीवी कैमरों के फुटेज खंगाले। यह कोई छोटा काम नहीं था। हर कैमरे के फुटेज को ध्यान से देखना, संदिग्ध व्यक्ति की तलाश कर उसकी गतिविधियों को ट्रैक करना। लेकिन कुछ दिनों की मेहनत के बाद पुलिस को सफलता मिली। एक सीसीटीवी फुटेज में आरोपी अब्दुल रसीद उर्फ तलवार सिंह चोरी की बाइक के साथ कैमरे में कैद हो गया हैरानी की बात यह थी कि उसने अपना चेहरा छिपाने की कोई कोशिश नहीं की थी।

पुलिस ने मुखबिरों के जरिए भी जानकारी जुटानी शुरू की। धीरे-धीरे पता चला कि अब्दुल एसआईआर के चलते वोटर लिस्ट से अपने माता-पिता की जानकारी लेने आया था। साफ था कि अब्दुल अपना काम करके चला गया और पुलिस हाथ मलती रह गई थी।

पुलिस ने एक बार फिर महाराष्ट्र पुलिस की मदद से उसके अपराध रिकॉर्ड की जांच की, तो सच्चाई सामने आई कि अब्दुल रशीद उर्फ तलवार सिंह, पर महाराष्ट्र में 55 से अधिक अपराध दर्ज थे, और उसके खिलाफ कुछ स्थायी वारंट भी जारी थे। जानकारी मिलते ही इंदौर पुलिस की एक टीम अकोला पहुँची। लेकिन तलवार सिंह को पकड़ना इतना आसान नहीं था। वह 18 साल से अकोला में रह रहा था, उसकी पत्नी और एक बच्चा था, और वह वहां के इलाके को अच्छी तरह जानता था। पुलिस को उसके घर पहुँचने से पहले ही खबर मिल गई, और जब वे पहुँचे, तो न सिर्फ तलवार सिंह, बल्कि उसकी पत्नी भी घर छोड़कर जा चुकी थी। लेकिन पुलिस हार मानने वाली नहीं थी। उन्होंने स्थानीय मुखबिरों के जरिए निगरानी जारी रखी। कुछ दिनों बाद, जब तलवार सिंह लापता होने के डर से कम हो गया और वापस अपने इलाके में दिखाई दिया, पुलिस ने छापा मारकर उसे गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तारी के वक्त उसके पास से 7 लाख 50 हज़ार रुपए का चोरी का माल बरामद हुआ जिसमें सोने-चाँदी के आभूषण और वही बाइक जो उसने इंदौर से चुराई थी शामिल हैं।

पुलिस रिमांड पर ले जाने के बाद तलवार सिंह से पूछताछ शुरू हुई। एसीपी तुषार सिंह की पूछताछ में कई चौंकाने वाले खुलासे हुए। आरोपी ने बताया कि वह रोज कमाने-खाने वाला व्यक्ति था। उसकी कोई निश्चित आय नहीं थी, और चोरी ही उसकी आजीविका का मुख्य स्रोत था। उसने यह भी स्वीकार किया कि वह नशे का आदी है और सभी तरह के नशे करता है गाँजा, अफीम, शराब, और कभी-कभी हेरोइन तक। पुलिस को संदेह है कि तलवार सिंह ने इंदौर में और भी चोरियाँ की होंगी। उन्हें लगता है कि वह बाइक चोरी का विशेषज्ञ था और उससे कई अनसुलझे बाइक चोरी के मामलों का भी खुलासा हो सकता है।

सबसे दिलचस्प बात यह थी कि उसने एसआईआर के लिए आवेदन क्यों किया? पूछताछ में उसने बताया कि वह एक खास पार्टी को जिताना चाहता है इसलिए वह हर चुनाव में वोट करता है। इससे पहले वह फरारी के दौरान भी इंदौर अपना वोट डालने आ चुका है। वह अपना जीवन सुधारना चाहता था, एक स्थायी नौकरी चाहता था, ताकि उसका बच्चा अच्छे माहौल में पले-बढ़े। लेकिन जब उसे इंदौर में एक सूना फ्लैट दिखा, तो पुरानी आदत ने उसे फिर से अपराध की ओर धकेल दिया। तलवार के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा 379 , 392 , 302 और 307 के तहत कई मामले दर्ज हैं जिसमें उसको अब सजा मिलना तय है।

कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित

इंदौर

18 साल बाद पकड़ा गया सैकड़ा भर से अधिक मामलों का आरोपी

एक हाथ में कटी गर्दन और दूसरे में तलवार लेकर थाने पहुंचने के बाद से ही अब्दुल रसीद का नाम तलवार सिंह पड़ गया था।

तलवार सिंह

" अब्दुल रसीद उर्फ तलवार सिंह को पिछले 18 साल से तलाश रही पुलिस को पूरा भरोसा था कि अब्दुल भले ही अपने सगे भाई बहन के निकाह में शामिल होने इंदौर न आया हो लेकिन एसआईआर के चलते वोटर लिस्ट से नाम न कट जाए इस बात का डर उसे इंदौर आने मजबूर कर देगा। अपितु अब्दुल इंदौर आया और नाम दर्ज करवाकर वापस चला भी गया लेकिन पुलिस को सुराग मिल चुका था इसलिए लगभग दो दशक से पुलिस और अब्दुल के बीच चल रहा आंख मिचौली का खेल खत्म हो ही गया।

पुलिस गिरफ्त में आरोपी

आरोपी तलवार सिंह

इंदौर की एक की रात। शहर सो रहा था, लेकिन पलासिया थाने में एक अलग ही हलचल थी। पुलिस अधिकारियों के चेहरे पर मुस्कान थी। आखिरकार वे उस शख्स को पकड़ने में कामयाब हो गए थे, जिसके नाम से पूरे मध्य भारत के अपराध जगत में खौफ था। नाम था अब्दुल रशीद, जिसे लोग 'तलवार सिंह' के नाम से ज्यादा जानते हैं।

देश के कई राज्यों के थानों में तलवार सिंह के खिलाफ 100 से भी अधिक मामले दर्ज है। अब्दुल रसीद को अपराध की दुनिया का डॉन बनने का शौक था। इसलिए अपराध जगत में उतरने के बाद उसने एक के बाद एक कई वारदातों को अंजाम दिया। लेकिन इतना करने के बाद भी जब उसने देखा कि उसके नाम की दहशत वैसी नहीं बन पा रही है जैसी की वो चाहता है तो अपनी दहशत कायम करने के लिए उसने एक रोज सड़क चलते एक निर्दोष की गर्दन तलवार से उड़ा दी। इसके बाद एक हाथ में खून सनी तलवार और दूसरे में निर्दोष का कटा सिर लेकर वह बस्ती से होता हुआ थाने पहुंचा था। इस घटना के बाद लोग उससे भय खाने लगे थे और उसका नाम अब्दुल रसीद के बजाए तलवार सिंह के नाम से फेमस हो गया।

अब्दुल रशीद की कहानी इंदौर के नॉर्थ तोड़ा इलाके से शुरू होती है। गरीबी के बीच पैदा हुआ यह लड़का बचपन से ही गलत संगत में पड़ गया। 19 साल की उम्र तक आते-आते उसने छोटी-मोटी चोरियां शुरू कर दी थीं। लेकिन असली मोड़ तब आया जब 2006 में एक चोरी के मामले में पकड़े जाने के बाद वह इंदौर से भागकर महाराष्ट्र के अकोला चला गया। अब तक अब्दुल जवान हो चुका था सो उसके दिल में एक साथी की ललक हिलौरें लेने लगी। चोरी का माल जैसे आता था वैसे ही वह अपनी शान शौकत पर खर्च कर देता था। इसलिए उसकी रईसी देखकर कई लड़कियां उसकी तरफ आकर्षित होने लगी। जिससे अब्दुल ने एक साथ कई लड़कियों से इश्क लड़ाते हुए एक युवती से शादी कर ली। शादी के बाद आमतौर पर अपराधियों में सुधरने की प्रवृति देखी जाती है लेकिन इससे उलट शादी के बाद अब्दुल फुल टाइम चोर बन गया। लेकिन चोरी चकारी के काम में नाम तो मिलता नहीं इसलिए जब उसने देखा कि चोरी करके वह लोगों में अपने नाम का भय पैदा नहीं कर सकता तो एक रोज उसने अजब वारदात को अंजाम दे डाला।

महाराष्ट्र के वर्धा क्षेत्र में एक घटना ने उसे 'तलवार सिंह' बना दिया। फेमस होने की चाहत में उसने एक

इसी फुटेज से मिला सुराग

व्यक्ति की तलवार से गर्दन काट दी और वह गर्दन लेकर सीधे थाने पहुँच गया। थाने जाने से पहले वह एक हाथ में तलवार और दूसरे में कटी गर्दन लेकर पूरी बस्ती में घूमा ताकि उसकी दहशत कायम हो सके। यह घटना इतनी डरावनी और असामान्य थी कि पूरे इलाके में उसका नाम तलवार सिंह पड़ गया। पुलिस रिकॉर्ड में भी वह इसी नाम से दर्ज हो गया। इंदौर के कई थाना इलाकों में तलवार के खिलाफ अनेक मामले दर्ज है। इसलिए पुलिस लगातार उस पर नजर रखे हुए थी। इसी बीच देश भर में वोटर लिस्ट के लिए एसआईआर की प्रक्रिया शुरू हुई। इससे पुलिस को भरोसा था कि अब्दुल भले की परिवार के कई उत्सव में शामिल न हुआ हो लेकिन वह एसआईआर के लिए जरूर इंदौर आ सकता है। इसलिए पुलिस ने अपने मुखबिर सक्रिय कर दिए।

दरअसल पुलिस को मालूम चला था कि एसआईआर के लिए तलवार को अपने माता-पिता की जानकारी चाहिए थी जो इंदौर में थी। उसकी दो बहनें भी इंदौर में रहती थीं, इसलिए वह उनके यहां ठहरा। लेकिन पुरानी आदतें जल्दी नहीं जातीं। एसआईआर का फॉर्म भरने के बाद, उसकी आपराधिक मानसिकता फिर से जाग उठी। उसने इंदौर में कोई बड़ा हाथ मारने की योजना बनाई। इसके लिए पहले उसने तिलक नगर इलाके से एक बाइक चुराई। इसके बाद वह पलासिया इलाके की ओर बढ़ा, जहां कई मल्टी-स्टोरी इमारतें थीं। इन मल्टी में उसे किसी खाली पड़े फ्लैट की तलाश थी। इसके लिए वह उसने गीतानगर का गायत्री अपार्टमेंट टारगेट पर लिया। यह एक शांत, मध्यमवर्गीय आवासीय परिसर। यहां एक फ्लैट की मालकिन, एक हॉस्टल संचालिका, कुछ दिनों के लिए शहर से बाहर गई हुई थी। तलवार सिंह ने इसी फ्लैट को निशाना बनाया। उसने देखा कि फ्लैट खाली है, ताला लगा है। अपने अनुभव के आधार पर उसने ताला तोड़ने में महज कुछ सेकंड लगाए। फ्लैट के अंदर उसे जो कुछ मिला, वह उसकी उम्मीद से कहीं ज्यादा था। वह यहां सोने-चाँदी के आभूषण और नगदी सहित लगभग 10 लाख रुपए का सामान ले भागा।

सबसे हैरान करने वाली बात यह थी कि उसने पूरी वारदात महज 6 मिनट में अंजाम दी। कोई शोर नहीं, कोई जल्दबाजी नहीं, बिल्कुल प्रोफेशनल की तरह। चोरी का सामान लेकर वह अपनी बहन के घर पहुँचा, वहां एक रात रुका, और अगले दिन उसी चोरी की बाइक पर सवार होकर अकोला की ओर भाग निकला।

शेष पृष्ठ 7 पर...

परिवार जानता है आरोपी का इतिहास

तलवार सिंह की कहानी में परिवार और समाज की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। वह गरीब परिवार से आता था। बचपन में ही उसकी शिक्षा छूट गई थी। गलत संगत ने उसे अपराध की दुनिया में धकेल दिया। जब वह 2006 में इंदौर से भागकर अकोला गया, तो वहां उसने शादी कर ली और एक बच्चा भी हुआ। लेकिन अपराध की दुनिया से निकलना उसके लिए आसान नहीं था। दिलचस्प बात यह है कि जब पुलिस उसे पकड़ने अकोला पहुँची, तो उसकी पत्नी भी घर छोड़कर चली गई। इससे पता चलता है कि परिवार को भी उसके अपराधों की जानकारी थी। तलवार सिंह की दो बहनें इंदौर में रहती थीं। जब वह एसआईआर का फॉर्म भरने इंदौर आया, तो वह उनके यहां ठहरा। पुलिस का मानना है कि उसकी बहनों को शायद यह पता नहीं था कि उनका भाई इतना बड़ा अपराधी है, या फिर वे उससे डरती थीं।

प्रोफेशनल अपराधी है तलवार सिंह

एसीपी तुषार सिंह के अनुसार तलवार सिंह एक प्रोफेशनल अपराधी है। उसने चोरी का काम इतने शांत और कुशल तरीके से किया कि पड़ोसियों को कानों-कान खबर नहीं हुई। उसने ताला तोड़ने में विशेषज्ञता हासिल है। तलवार सिंह जैसे अपराधी अक्सर ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं। गर्दन काटकर थाने ले जाने की घटना इसी मानसिकता का परिणाम थी वह चाहता था कि पूरी दुनिया उसे जाने, उससे डरे, भले ही इसके लिए उसे सबसे भयानक अपराध क्यों न करना पड़े। नशे की लत ने उसकी स्थिति और बिगाड़ दी थी। नशे के बिना उसे चैन नहीं मिलता था, और नशा करने के लिए उसे पैसे चाहिए थे, जो उसे चोरी करके ही मिल सकते थे। यह एक दुष्चक्र बन गया था।